21

आलंकारिक परिचय-2

कवि साहित्य के निर्माण के लिए प्रयत्न करते हैं परन्तु अज्ञात पूर्वकता से ही साहित्य में अलंकारों का आत्मप्रकाश होता है। जैसे विश्व के प्राचीनतम ऋग्संहिता में ऋषियों ने अज्ञात पूर्वकता से ही अलंकारों का प्रयोग किया।

ऋग्वेद में उपमा रुपक अतिशयोक्ति अनुप्रास इत्यादि अलंकारों का प्रयोग है। अग्निपुराण में काव्य विभाग, काव्य की रीति, काव्य के गुण इत्यादि विषय वर्णित हैं। इसमें भी आगे साहित्यशास्त्र के विवेचन के लिए अलंकारशास्त्र का भी समागम हुआ। प्राचीन आलंकारिकों ने काव्य के विषय में बहुत से मत प्रदान किये। काव्य में प्राणभूत कौन होता है। इस विषय को लेकर आलंकारिकों के मतसाम्य और मतवैषाम्य दोनों दिखाई देते हैं। आनन्दवर्धन ने अपने ग्रन्थ ध्वन्यालोक में ध्वनि को काव्य की आत्मा कहा है और ध्वनिविरोधी मत को उपस्थापित कर खण्डन किया। उसके बाद मम्मट ने काव्यप्रकाश लिखा। उन्होंने काव्य का लक्षण ''तददोषो शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि'' कहा है। इस लक्षण को खण्डित करके विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण लिखा। उन्होंने काव्य का लक्षण दिया- ''वाक्यंरसात्मकं काव्यम्।'' इसके बाद जगन्नाथ ने इसका खण्डन करके रसगंगाधर ग्रन्थ में ''रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्'' लिखा। इस प्रकार आलंकारिकों ने काव्य के विषय में अपने सिद्धान्तों को प्रतिपादन किया।

भारतीय परम्परा में विद्वानों ने अपने ग्रन्थों में अपना परिचय नहीं दिया। इसलिए इन विद्वानों के देश काल और कृति के विषय में विचार दुष्कर है। परन्तु ध्वनिकार के मत को मम्मट ने स्वीकार किया, मम्मट के मत का विश्वनाथ ने खण्डन किया। इस प्रकार आनन्दवर्धन, मम्मट और विश्वनाथ आदि के मध्य पौर्वापर्य सम्बन्ध जान सकते हैं। कुछ ग्रन्थों में तत्कालीन राजाओं के नाम उपलब्ध होते हैं। इन प्रमाणों से आनन्दवर्धन, मम्मट विश्वनाथ, जगन्नाथ इनके विषय में देश काल और कृति के विषय में अनुमान किया जाता है। यही इस पाठ का विवेच्य विषय है।

उद्देश्य-

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे-

- ध्वनिकार का परिचय जान पाने में;
- ध्वनिकार की कृति को जान सकने में;
- किसने किस सम्प्रदाय की स्थापना की, यह जान पाने में;
- आलंकारिकों के देश, काल व कृतियों का ज्ञान प्राप्त कर पाने में; और
- आलंकारिकों के वंश परिचय का ज्ञान कर पाने में।

टिप्पणी

21.1 आनन्दवर्धन

आनन्दवर्धन काव्यशास्त्रकाश में समुज्ज्वल नक्षत्र हैं। काव्यशास्त्र के इतिहास में आनन्दवर्धन ने एक उज्ज्वल अध्याय की रचना की। आनन्दवर्धन के बिना अलंकारशास्त्र कदापि पूर्ण नहीं होता। काव्य जगत में ध्वन्यालोक का प्रवेश महान सौभाग्य की बात है। आनन्दवर्धन ने काव्य में ध्वनि ही प्रधान है, यह मानकर ध्वनिसम्प्रदाय आरम्भ किया। ध्वन्यालोक में अभाववादी, लक्षणावादी, और अनिर्वचनीयतावादियों के मत का खण्डन करके सर्वप्रथम ध्वनि का प्रतिपादन किया। इस समय उस ध्वनिकार के देशकाल व कृति के विषय में समालोचना करते हैं।

देश- आनन्दवर्धन काश्मीर क्षितिपाल अवन्तिवर्मन के सभापण्डित थे उसका प्रमाण यह श्लोक है।

मुक्ताकणः शिवस्वामी कविरानन्दवर्धनः।
प्रथां रत्नाकरश्चागात् साम्राज्येऽवन्तिवर्मणः॥

अतः यह सिद्ध है कि आनन्दवर्धन काश्मीरवासी थे।

काल- अवन्तिवर्मन के सभापण्डित होने से अवन्तिवर्मन का समय 855-883 ई ही आनन्दवर्धन का भी समय है।

वंशपरिचयः - आनन्दवर्धन के पिता का नाम नोणभट्ट था। कुछ लोग ध्वनिकार और ध्वन्यालोककार को समान मानते हैं और वह आनन्दवर्धन है। जिसका प्रमाण राजशेखर का यह श्लोक है-

ध्वनिनातिगम्भीरेण काव्यतत्वनिवेशिना।
आनन्दवर्धनः कस्य नासीदानन्दवर्धनः॥

टिप्पणी

परन्तु ध्वन्यालोक के टीकाकार अभिनवगुप्त कहते हैं कि ध्वनिकार और ध्वन्यालोककार समान नहीं है।। ध्वनि कारिका के ऊपर रचित वृति का नाम ध्वन्यालोक है। वहां कारिका ध्वनि कारिका को कहा गया है। वृति का नाम आलोक है। कुछ के मत में तो ध्वनिकार का दूसरा नाम सहृदय है।

कृति- इस आचार्य ने ध्वनिप्रस्थान के प्रवर्तन के लिए ध्वन्यालोक ग्रन्थ की रचना की। ध्वन्यालोक का दूसरा नाम सहृदयलोक या काव्यालोक है। आनन्दवर्धन के ध्वन्यालोक के अतिरिक्त विषमबाणलीला, अर्जुनचरितम् देवीशतकम्, ये तीन कविता ग्रन्थ प्राप्त होते हैं। ध्वन्यालोक में तीन अंश है। कारिका, वृति एवं उदाहरण। अनेक कवियों की रचनाओं से उदाहरण संकलित है। परन्तु कारिका एवं वृति स्वयं रचित है। कुछ लोग कहते है कि आनन्दवर्धन ने किसी अज्ञात नाम की कृति से कारिका स्वीकार की है। केवल वृति ही आनन्दवर्धन की रचना है। इस ग्रन्थ में 129 कारिका है 4 अद्योत है। प्रथम उद्योत में ध्वनि विरोधी मतों का निराकरण करके काव्य की आत्मा ध्वनि की स्थापना की है। उसके बाद वस्तु ध्वनि, अलंकार ध्वनि और रस ध्वनि का प्रतिपादन किया है। पुनः ध्वनि दो प्रकार की होती है। विवक्षितान्यपरवाच्यध्वनि और अविवक्षितवाच्यध्वनि। ध्वनि के दोनों विभागों को उदाहरणों से प्रतिपादन किया है।

द्वितीय उद्योत में अविवक्षितवाच्य ध्वनि के भेद, प्रेयस, रस ध्वनि के भेद, गुण अलंकारों के भेद, इत्यादि विषय समालोच्य है। तृतीया उद्योत में रीति, वृतियों का वर्णन है, चतुर्थ उद्योत में कवि प्रतिभा का और गुणीभूतव्यंग्य काव्य का वर्णन है।

ध्वनि प्रस्थान के प्रथम आचार्य आनन्दवर्धन है। ध्वन्यालोककार से पूववर्ती आचार्यो ने अलंकार, रीति, गुण, को काव्य की आत्मा माना था। उनमें से ये प्रथम है, जिन्होंने ध्वनि को काव्य की आत्मा माना है। तीन शक्तियों से शब्द और अर्थ का प्रतिपादन किया हैं अभिधा, लक्षणा और तात्पर्य। इन तीन शक्तियों के अतिरिक्त व्यञ्जना वृति होती है। ध्वनिवाद में व्याकरण के प्रसिद्ध स्फोटतत्व को स्वीकार किया है। काव्य में रीति गुण अलंकार का स्थान निर्णय करके ध्वनि का प्रतिपादन किया आनन्दवर्धन के मत में गुणादि केवल वाच्य वाचक चारुत्व के हेतु के अतिरिक्त कुछ नहीं हैं। काव्य में शब्द और अर्थ स्वयं की प्रधानता को छोड़कर वाच्यातिरिक्त व्यंग्यार्थ का प्रतिपादन ही ध्वनि है। कहा है-

यत्रार्थः शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनीकृत स्वाथौ।

व्यङ्क्तः काव्यविशेषः स ध्वनिरिति सूरिभिः कथितः।।

ध्वनिवाद में गुणरीति अलंकार आदि सभी रसपर्यावसायी हैं। ध्वन्यालोककार के मत से प्रभावित अभिनवगुप्त ने लोचन टीका लिखी।

पाठगत प्रश्न 21.1

1. ध्वन्यालोककार का समय क्या है?
2. ध्वन्यालोककार का देश क्या है?
3. ध्वन्यालोककार के पिता का नाम क्या है?
4. आनन्दवर्धन के ग्रन्थों का नाम लिखें।
5. ध्वनिसम्प्रदाय के प्रवर्तक कौन हैं?
6. ध्वन्यालोक में कितनी कारिका हैं?

टिप्पणी

21.2 अप्पयदीक्षितः

आलंकारिकों में अप्पयदीक्षित का नाम महत्वपूर्ण है। ये न केवल अलंकारशास्त्र से निपुण है अपितु दूसरे शास्त्रों में भी इनकी निपुणता है। प्रायः सभी शास्त्रों में इनके ग्रन्थ है। अप्पय दीक्षित साहित्यिक, अद्वैती, विशिष्टाद्वैत, व्याकरण, आलंकारिक, और कवि है। इन्होंने प्रायः सौ ग्रन्थ लिखे है, उनमें से अलंकार सम्बन्धित तीन ग्रन्थ है। इनका अप्पय दीक्षित, अप्पदीक्षित और अप्पयदीक्षित इन तीन नामों से संस्कृत जगत में परिचय होता है। जगन्नाथ के रसगंगाधर में तीनों नाम सुने जाते हैं।

देश- अप्पयदीक्षित का जन्म दक्षिण भारत में हुआ था। तमिलनाडु प्रान्त के अन्तर्गत आर्काड्मण्डल स्थित अडयप्पल नामक गांव में जन्म हुआ। इस प्रकार अप्ययदीक्षित का देश तामिलनाडु प्रदेश था।

काल- इनका समय 7वीं शताब्दी था। जगन्नाथ ने अप्पयदीक्षित के चित्रमीमांसा ग्रन्थ का खण्डन किया है। अतः जगन्नाथ से पूर्व होना निश्चित है। अप्पयदीक्षित वेंकट प्रथम के निर्देश से कुवलयानन्द नामक ग्रन्थ की रचना की। वेंकट प्रथम का समय 1586-1613 ईस्वी था। यही काल अप्पयदीक्षित का अनुमित होता है। परन्तु उस वंश में अप्पय नाम के बहुत से विद्वान थे इस कारण से प्रकृत अप्पयदीक्षित का काल निर्धारण दुष्कर है।

वंश परिचय- ये रंगराजाध्वरीन्द के पुत्र थे। ये भारद्वाजवंशोत्पन्न थे। कुवलयानन्द में स्वयं लिखते है- ''इति श्रीमदद्वैतविद्याचार्यश्रीमत्भरद्वाजकुल-जलधिकौस्तभ-श्रीरंगराजाध्वरीन्द्र-वरसूनोः श्रीमदप्पयदीक्षितस्य कृतिः कुवलयानन्दः समाप्तः।।'' अप्पयदीक्षित के सभी पिता-पितामह आदि श्रोत्रिय ज्योतिष्टोमादियागों के आहर्ता सामवेदी थे। अद्वैती भी होकर शिव भक्ति पारायण थे। इनके पितामह आचार्य दीक्षित थे। इनके आश्रय दाता वेंकटराज थे।

कृति- बहुत ही विश्वसनीय प्रमाणों से ज्ञात होता है कि अप्पय दीक्षित ने सौ ग्रन्थों की रचना की। वेदान्त संबंधी, मीमांसा, व्याकरण, शिवाद्वेत, स्तोत्र अलंकार और काव्य आदि से सम्बन्धित ग्रन्थ है।

वेदान्तविषयग्रन्थ - 1 सिद्धान्तलेशसंग्रह, 2 न्यायरक्षामणि 3 कल्पतरुपरिमल 4 न्यायमुक्तावली 5 न्यायमणिमाला 6 न्यायमंजरी 7 अधिकरणपंजिका 8 तत्त्वमुक्तावली 9 मणिमालिका आदि

शिवाद्वैतपरायण ग्रन्थ- 1 शिरवरिणी, 2 रामायणतात्पर्य संग्रह, 3 भारततात्पर्य संग्रह, 4 शिवपूजाविधि, 5 आनन्दलहरी 6 शिवार्चनचान्द्रिका, 7 शिवाद्वैत निर्णय: आदि

मीमांसाशास्त्रपरक ग्रन्थ - 1 विधिरसायन, 2 सुखोपयोजिनी, 3 उक्रपराक्रम, 4 तन्त्रिकामीमांसा, 5 चित्रापट 6 धर्ममीमांसापरिभाषा आदि

व्याकरण में एक ग्रन्थ है ''पाणिनीयतन्त्रवादनक्षत्रमाला''

अलंकारशास्त्र में चार ग्रन्थ है - 1 कुवलयानन्द 2 चित्रमीमांसा 3 वृतिवार्तिक 4 लक्षणरत्नावली

स्त्रोतसंबंधी ग्रन्थ - 1 वरदराजस्तव: 2 इदंस्तवव्याख्या 3 आत्मार्पणस्तुति 4 मानसोल्लास: 5 आदित्यस्तोत्रम् 6 गंगाधरराष्टकम् आदि।

यहं कुछ ग्रन्थों का सामान्य परिचय देते हैं- अप्पय दीक्षित ने जयदेव विरचित चन्द्रालोक का आश्रय लेकर कुवलयानन्द ग्रन्थ की रचना की। वह ग्रन्थ अलंकारों के ऊपर टीका विशेष है। इसमें 273 श्लोक है। ये स्वयं कहते है कि चन्द्रालोक के अलंकारों के लेकर कुछ नवीन अलंकारों का प्रतिपादन किया है। चन्द्रालोक में सौ अलंकार है इन्होंने उनके साथ 15 अलंकार और जोड़ दिया। जैसा कि कहा है-

येषां चन्द्रालोके दृश्यन्ते लक्ष्यलक्षणश्लोका:।
प्रायस्त एव तेषामितरेषां त्वभिनवा विरच्यन्ते॥

इनका चित्रमीमांसा उत्कृष्ट ग्रन्थ है। इसमें केवल 12 अलंकारों का वर्णन है। इसमें कारिका की रचना के बाद अन्य आचार्यो के मतों को उपस्थित किया है। काव्य के ध्वनि, गुणीभूतव्यंग्य और चित्र ये तीन विभाग किये है। इसके बाद उपमालंकार का विचार किया है। 12 अलंकारों को उपमा के अन्तर्गत दर्शाया है। परन्तु जगन्नाथ ने चित्रमिमांसा का खण्डन किया है तथा चित्रमीमांसाखण्डन पुस्तक की रचना की।

वृत्तवार्तिक भी अलंकारशास्त्र का ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में दो परिच्छेद है। इसमें अभिधा व लक्षणा की चर्चा की गई है। व्यंजना के विषय में कुछ नहीं कहा गया। कुछ के मत में लक्षणरत्नावली भी अलंकारशास्त्र का ग्रन्थ है इसमें नान्दीपाठ, सूत्रधार, पूर्वरंग, प्रस्तावना आदि विषय वर्णित है।

पाठगत प्रश्न 21.2

7. अप्पय दीक्षित का समय क्या है?
8. अप्पय दीक्षित का देश कौन सा है?
9. अप्पय दीक्षित के पिता का नाम क्या है?
10. अप्पय दीक्षित के एक अलंकारशास्त्र के ग्रन्थ का नाम लिखिए?
11. किस आधार पर कुवलयानन्द की रचना की?
12. कुवलयानन्द में कितने श्लोक हैं?
13. वृत्तवार्तिका में कितने परिच्छेद हैं?
14. चित्रमीमांसा ग्रन्थ का खण्डन ग्रन्थ कौन सा है?
15. अप्पय दीक्षित का आश्रयदाता कौन है?

टिप्पणी

21.3 मम्मट

आलंकारिकों में मम्मट मूर्धन्य आचार्य हैं। संस्कृत साहित्य में एक भी छात्र नहीं होगा जो मम्मट को नहीं जानता हो। अलंकार साहित्य में जब तक मम्मट का उदय नहीं हुआ था तब तक ध्वनि विरोधी ग्रन्थों को लिख चुके थे। पर मम्मट ने ध्वनि विरोधियों को अधिक्षिप्त किया जिससे पुनः ध्वनि का विरोध करने का साहस नहीं कर सकें। इसलिए मम्मट को वाग्देवतावतार ध्वनिप्रस्थान परमाचार्य कहा जाता है। संस्कृत जगत ने राजानक उपाधि से विभूषित किया। मम्मट के देश काल एवं कृतियों के विषय में समालोच्य है।

देश- मम्मटाचार्य काश्मीर वासी भोजराज के परवर्ती है। मम्मट को राजानक उपाधि भी काश्मीरवासी प्रमाणित करती है।

काल- आनन्दवर्धन के ध्वनि प्रस्थान को सुदृढता से स्थपित करने के लिए मम्मट ने काव्यप्रकाश को लिखा। इस प्रकार मम्मट आनन्दवर्धन से परवर्ती है। मम्मटाचार्य ने अपने ग्रन्थ में अभिनवगुप्त के मत का उल्लेख किया। अभिनवगुप्त ग्यारहवीं शताब्दी में हुए थे। अतः उनसे परवर्ती हुए, पद्यगुप्त के नवसाहसाकंचम्पू काव्य में स्थित भोजराज प्रशंसा के श्लोक का उदाहरण काव्यप्रकाश में लिया है। नवसाहसांकचम्पूकाव्य का रचनाकाल ग्यारवीं शताब्दी है। भोजराज से परवर्ती थे। भोजराज का शासनकाल 993 ई. 1051 ई. थे। अतः मम्मटाचार्य का समय 11वीं शताब्दी था।

वंश परिचय- मम्मट के पिता का नाम जैयट था। मम्मट के अनुज कैयट और उव्वट थे। मम्मटाचार्य नैषधीयचरित ग्रन्थ के रचयिता श्री हर्ष के मामा थे। मम्मट काश्मीरी थे परन्तु संस्कृत शिक्षा की प्राप्ति के लिए शिक्षा की पीठ वाराणसी आ गये। इस प्रकार वाराणसी में रहकर ही काव्यप्रकाश की रचना की।

कृति- मम्मट की एक कृति काव्यप्रकाश है। मम्मट ने सम्पूर्ण काव्यप्रकाश की रचना नहीं की। काव्यप्रकाश दशमपरिच्छेदगत परिकर अलंकार तक रचना की थी उसके बाद के अवशिष्ट भाग अल्लटनाम के किसी विद्वान ने की है-

कृतोऽयं मम्मटाचार्यैर्ग्रन्थः परिकरावधिः।
प्रबन्धः पूरितः शेषो विधयाल्लटसूरिणा॥

मम्मट की विद्वत्ता के प्रमाण के लिए काव्यप्रकाश ही पर्याप्त है। मम्मट की दूसरी कृति शब्दव्यापारवृति है। मम्मटाचार्य ने संगीतरत्नमाला भी लिखा। परन्तु ये दोनों ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है। परन्तु कुछ लोग नहीं मानते है। काव्य प्रकाश में दस उल्लास है। इस ग्रन्थ में 143 कारिका है। वस्तुत मम्मटाचार्य ध्वनिवाद के समर्थन के लिए काव्यप्रकाश लिखा। काव्यप्रकाश के तीन अंश है जैसे कारिका, वृति और उदाहरण। भरत की कुछ कारिकों का अपने ग्रन्थ में निवेश किया। अवशिष्ट कारिका स्वयं ने लिखी। वृति भी मम्मट ने रची। उदाहरण अन्य कवियों की कृतियों से संकलित है। प्रायः छः कारिका भरत के नाट्यशास्त्र से स्वीकृत है। परन्तु इस मत में भ्रान्ति है। मम्मट आनन्दवर्धन और अभिनवगुप्त के मत से प्रभावित होकर ध्वनिसिद्धान्त को सुदृढ़ करने के लिए काव्यप्रकाश के प्रथमोल्लास से काव्य रचना का उद्देश्य, काव्यलक्षण, काव्य के भेद वर्णित है, द्वितीयोल्लास में शब्दवृति और अर्थवृति का वर्णन हैं। तृतीयोल्लास में व्यञ्जना वृति का विस्तृत वर्णन है। चतुर्थोल्लास में ध्वनि के भेद एवं रसस्वरुप आलोचना वर्णित है। पंचमोल्लास में ध्वनिगुणीभूतव्यंग्य काव्य का उसके भेद वर्णित है, षष्ठोल्लास में चित्रकाव्य का वर्णन है। सप्तमोल्लास में दोषों का वर्णन, अष्टमोल्लास में काव्यगुणों का वर्णन है। काव्य प्रकाश की महत्ता इस बात से है कि भागवत गीता से भी अधिक टीकाएं काव्यप्रकाश पर उपलब्ध है। प्रायः संस्कृत में 75 टीकाएं हैं। संस्कृत से भिन्न भाषा में टीकाएं उपलब्ध हैं। अतः काव्यप्रकाश लोकप्रसिद्ध ग्रन्थ है।

पाठगत प्रश्न 21.3

16. मम्मट की उपाधि क्या है?
17. मम्मट का काल क्या है?
18. मम्मट का देश कौन सा है?
19. मम्मट के पिता का नाम क्या है?

20. मम्मट के ग्रन्थ का नाम क्या है?

21. काव्यप्रकाश में कितने उल्लास हैं?

22. काव्यप्रकाश में कितने कारिका है?

23. मम्मट ने कहाँ अध्ययन किया?

21.4 भोजराज

अलंकार साहित्य में भोजराज का नाम प्रसिद्ध है। महाराज भोज धारानगर के शासक थे। राजकार्य के साथ शास्त्रों की चर्चा करते थे। महाराज भोज का कविजनप्रियता तो सर्वजन प्रसिद्ध हैं। शास्त्रों में अधिक प्रीति थी। अपनी राजकीय सभा में विद्वानों का आह्वाहन सदा करते थे। उनके साथ स्वयं भी अध्ययन करते थे। इस प्रकार सरस्वतीकण्ठाभरणम्, श्रृंगारप्रकाश, रामायणचम्पू आदि ग्रन्थों की रचना की। साहित्य में महापाण्डित्य पूर्ण उज्ज्वल नक्षत्र थे।

देश- प्राचीन शिलाखण्डों पर महाराज के शासन काल और वंश का परिचय स्पष्टरूप में लिखा हुआ है। महाराज भोज मालवदेश के धारानगर के शासक और परमार वंश के थे। अत: भोज का देश मालवा निश्चित है।

काल- भोज 1018 ईसवी मे सिंहासनारुढ होकर 1063 ईसवीं तक शासनकार्य किया अत: भोज का समय ग्यारवी शताब्दी था। मालवराज काश्मीर के अनन्तराज के समकालीन थे।

स च भोजनरेन्द्रश्च दानोत्कर्ष विश्रुतौ।
सूरी तस्मिन् क्षणे तुल्यं द्वावास्ताम् कविबान्धवौ॥

इस राजतरंगिणी के वचन से ज्ञात होता है अनन्तराज 1020 - 1189 मिति विक्रमाब्द में स्थित थे। इसके अतिरिक्त 1078 ई में भोज के दान पत्र भी प्राप्त होता है। अत: इनका समय 1030 से 1110 ईसवी के मध्यवर्ती माना जाता है।

कृति- जगत में राजकार्य को करते हुए शास्त्राध्ययन करके शास्त्रादि की रचना करने वाले मानव दुर्लभ हैं। राजा भोजराज ने सरस्वतीकण्ठाभरणम, श्रृंगारप्रकाश, ये दो ग्रन्थ है। सरस्वतीकण्ठाभरण में पांच परिच्छेद हैं। प्रथम परिच्छेद में दोष एवं गुणों का विवेचन है। पदगत 16, वाक्यगत 16, तथा वाक्यार्थगत 16 आदि 64 दोषों का विवेचन है। इसी प्रकार शब्दगत 24, अर्थगत 24 दोषों का वर्णन है। द्वितीय परिच्छेद में 24 शब्दालंकारों, तृतीयपरिच्छेद में अर्थालंकारों, चतुर्थ परिच्छेद में उभयलंकारों एवं पञ्चम परिच्छेद में रस भाव, सन्धि एवं वृतियों का निरूपण है। रत्नेश्वर ने सरस्वतीकण्ठाभरण की रत्नदर्पणाख्या नाम से व्याख्या की है। यह व्याख्या तृतीय परिच्छेद तक उपलब्ध है। चतुर्थ परिच्छेद

की टीका जगदधर ने की एवं चतुर्थ पंचम परिच्छेद की जीवानन्द प्रणीत व्याख्या प्राप्त होती है।

श्रृंगारप्रकाश इनका दूसरा ग्रन्थ है। इसमें 36 प्रकाश है। प्रथम आठ प्रकाश में शब्दार्थ विषयक वैयाकरण के मतों का निरुपण है। नवें में गुण, दसवें में दोष ग्यारहवें मे महाकाव्य, बारहवें में नाट्य का संप्रपच निरूपण है। शेष 24 प्रकाशों में रस का सांगोपांग विवेचन है। भोजमत में तों श्रृंगार ही सर्वरसेश्वर है जैसे-

श्रृंगार वीर करुणादभुतरौद्रहास्य वीभत्सवत्सलभयानक शान्तनाम्नः।
अम्नासिषुर्दश रसान् सुधियों वयं तु श्रृंगारमेव रसनाद्रसनाम नाम॥

किन्तु जो श्रृंगार है वह न केवल युवाओं के परस्पर आकांक्षात्मक अपितु धर्मार्थकाम मोक्ष आदि चार प्रकार का है। काव्यशास्त्र के वन में श्रृंगारप्रकाश सर्वाधिक दीर्घकाय पुष्प सर्वोत्कृष्ट है। भोजराज का चम्पूरामायण काव्य भी प्राप्त होता है। परन्तु अलंकार सम्बन्धित ग्रन्थ नहीं है। अतः यहां चर्चा अनपेक्षित है।

पाठगत प्रश्न 21.4

24. भोजराज का देश कौन सा है?
25. भोजराज का काल क्या है?
26. सरस्वतीकण्ठाभरण का रचयिता कौन है?
27. सरस्वतीकण्ठाभरण में कितने परिच्छेद हैं?
28. श्रृंगारप्रकाश में कितने प्रकाश है?
29. भोजमत में काव्य में कौन सा रस प्रधान है?
30. चम्पूरामायण के कर्ता कौन है?

21.5 विश्वनाथ

संस्कृत काव्यशास्त्र में मम्मट के बाद विश्वनाथ अत्यन्त प्रसिद्ध है। काव्यप्रकाश के बाद विश्वनाथ का साहित्यदर्पण लोकप्रिय ग्रन्थ है। विश्वनाथ के जन्म समयादि के विषय में स्पष्ट प्रमाण नहीं मिलते है। इसलिए उसका निरुपण कठिन प्रतीत होता है। अब विश्वनाथ के देशकाल एवं कृति के विषय में समालोचना की जा रही है।

देश- कविराज विश्वनाथ उत्कलदेशीय थे। क्योंकि विश्वनाथ श्रीनरसिंह के सभापण्डित और सन्धिविग्रहक थे। इन के पितामह भी श्रीनरसिंह राजा के मुख्य सभा सदस्य थे। श्रीनरसिंह का राज्य उत्कलदेश था। अतः विश्वनाथ का भी निवास स्थान उत्कलदेश ही है।

टिप्पणी

काल- कविराज विश्वनाथ मम्मट से अर्वाचीन थे। क्योंकि साहित्यदर्पण में मम्मट के काव्यलक्षण का खण्डन दिखाई देता है। विश्वनाथ जगन्नाथ से प्राचीन थे। क्योंकि जगन्नाथ ने रसगंगाधर में लिखा है यतु रसवदेव काव्यमिति साहित्यदर्पणे निर्णीतं तन्न। मम्मट और जगन्नाथ के मध्यवर्ती काल में विश्वनाथ हुए। साहित्यदर्पण के चौथे परिच्छेद में यवनराज अलाउद्दीन का स्मारक श्लोक है-

सन्धै सर्वस्वहरणं विग्रहे प्राणनिग्रहः।
अल्लावुद्दीननश्पतौ न सन्धिर्न विग्रहः॥

इस श्लोक में अल्लाउद्दीन खिलजी स्मृत होता है। यह 1310 ईसवी मे मर गये थे। निष्कर्ष रूप से विवेचन होता है कि ग्यारहवीं बारहवीं और तेरहवीं शताब्दी में हुए मम्मट श्रीहर्ष और जयदेव हुये । उनके वाक्य तददोषौ शब्दार्थौ, धन्यासि वैदार्भि, ''कदली कदली'' से स्पष्ट साहित्यदर्पण में उद्धृत हैं। पन्द्रहवीं शताब्दी में उत्पन्न हुए काव्यप्रदीप कर्ता ''गोविन्दठाक्कुर द्वारा तददोषौ शब्दार्थौ की विचार वेला में अर्वाचीननस्तु'' इत्यादि से विश्वनाथ का मत ही उपस्थापित था। इन सब कारणों से विश्वनाथ चौदहवीं शताब्दी के माने जाते हैं।

वंश परिचय- विश्वनाथ समृद्धकुल मे उत्पन्न हुए थे। इसके कुल का पाण्डित्य प्रसिद्ध है। विश्वनाथ के पिता चन्द्रशेखर थे विश्वनाथ के पिता चन्द्रशेखर ने पुष्पमाला, और भाषार्णव दो ग्रन्थों की रचना की। स्वयं साहित्यदर्पण में कहा है-

श्रीचन्द्रशेखर महाकवि चन्द्रसूनु श्रीविश्वनाथ कविराजकुलं प्रबन्धम्।
साहित्यदर्पणममुं सुधियो विलोक्य साहित्यतत्त्वमखिलम् सुखमेव वित्त॥

इससे प्रमाणित होता है कि चन्द्रशेखर के पुत्र विश्वनाथ थे। इनके पितामह नाम नारायणदास था जैसा कि साहित्यदर्पण में उल्लेखित है ''यदाहु-श्रीकलिंगभूमण्डलाखण्डलमहाराजधिराज श्रीनरसिंहदेवसभायाम् धर्मदत्तं स्थगयन्तः सकलहृदयगोष्ठीगरिष्ठकविपण्डितास्मत्पितामह श्रीनारायणदासपादाः।''

विश्वनाथ के पितामह के भाई चण्डीदास थे। चण्डीदास ने काव्यप्रकाश की 'दीपिका' नामक टीका की रचना की। विश्वनाथ के विशेषण सन्धिविग्रहक से पता चलता है कि ये जाति से ब्राह्मण थे।

कृति- प्रकाण्ड विद्वत्कुल उत्पन्न विश्वनाथ भी सर्वशास्त्र स्वन्तन्त्र महान विद्वान थे। ये पण्डितप्रवर न केवल संस्कृत भाषा जानते थे अपितु 18 भाषाओं को जानने के कारण इनको ''अष्टादशभाषावारविलासिनीभुजंग'' उपाधि प्राप्त थी। विश्वनाथ की कृति साहित्यदर्पण, काव्यप्रकाशदर्पण, राघवविलास महाकाव्य, कुवलयाश्वचरितकाव्यम् प्रभावतीपरिणयनाटिका, चन्द्रकलानाटिका नरसिंहविजयकाव्यम् और प्रशस्तिरत्नावली है।

इन कृतियों में सबसे प्रसिद्ध साहित्यदर्पण है। इसमें काव्य और नाटक का सर्वांगीण विवेचन है। साहित्यदर्पण काव्यशास्त्र का रत्नभूत ग्रन्थ है। इसमें 10 परिच्छेद हैं। प्रथम में काव्य

विवेक, द्वितीय में शब्दशक्ति, तृतीया ने रसनिरूपण, चतुर्थ में ध्वनि विवेक, पंचम में व्यञ्जनावृति, षष्ठ में काव्य विभाग, सप्तम में दोष प्रपंच, अष्टम में गुण निरूपण, नवम में रीतिनिरूपण, दशम में शब्दार्थलंकार विचार वर्णित है। विषयवस्तु की दृष्टि से विश्वनाथ ने मम्मट का ही अनुसरण किया है किन्तु कहीं कहीं मम्मट को दोष भी देते हैं विशेषकर काव्य के लक्षण के विषय में, लक्षण को खण्डन करके 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम् कहकर स्वयं का लक्षण स्थापित किया। साहित्यदर्पण पर अनेक टीकाए लिखी गई। जैसे आनन्ददास की लोचनाख्या टीका, महेश्वराख्य की विज्ञप्रिया टीका, जीवानन्दविद्यासागर की विमला टीका, कृष्णणमोहन की लक्ष्मी टीका, लोकमणिदाहालाख्या की कला टीका है। बाद के काव्य शास्त्र पर साहित्यदर्पण का स्पष्ट प्रभाव पड़ा है। रसविवेचन में अलंकार विरूपण में काव्यभेद विवेक में उसके पश्चाद्वर्ती साहित्यदर्पण पर उपजीवित है।

पाठगत प्रश्न 21.5

31. विश्वनाथ कहां के निवासी थे?
32. विश्वनाथ का काल क्या है?
33. साहित्यदर्पण ग्रन्थ के रचियता कौन है?
34. विश्वनाथ के पिता का नाम क्या था?
35. विश्वनाथ के पितामह का नाम क्या था?
36. साहित्यदर्पण में कितने परिच्छेद है?
37. विश्वनाथ के पिता के ग्रन्थ का नाम?
38. चण्डीदास के ग्रन्थ का नाम?

21.6 जगन्नाथ

आलंकारिकों में जगन्नाथ महत्वपूर्ण है। जगन्नाथ ने अनेक ग्रन्थों की रचना की। जगन्नाथ का रसगंगाधर आलंकारिक ग्रन्थों में अग्रगण्य है। जगन्नाथ विविध विषयों में महान पण्डित थे। पण्डितगज जगन्नाथ का अभ्युदय काव्यशास्त्र में नव्यपरम्परा का द्योतक है। इन्होंने काव्य सिद्धान्तों की नव्यन्यायपरम्परा से व्याख्या की।

देश– पण्डितराज कोण सीमा स्थान के त्रिलिंग ब्राह्मण थे। आन्ध्रप्रदेश के पूर्व गोदावरीजनपद में यह स्थान है। कुछ विद्वान कहते है कि पण्डितराज गुण्टूर जनपद के तेनाली प्रखण्ड मे दाउनूरु ग्राम में थे। यह अनुमान उनकी कुलपरम्परा के आश्रय से संभावित है। ऐसा प्रतीत होता है कि गुण्टूरजनपद से गोदावरी जनपद इनके पूर्वज गये होंगे। किन्तु जगन्नाथ का रसगंगाधर में इनके पिता वाराणसी में अवस्थिति यह प्रमाणित होता है। इस प्रकार

टिप्पणी

पण्डितराज की जन्म भूमि और विद्याभूमि वाराणसी थी तथा कर्मभूमि जयपुर, दिल्लीनगर, मधुपुरी, असमप्रदेश तथा अन्त में पुनः वाराणसी रही।

काल- ये मुगलशासक शाहजहाँ के सभापण्डित थे अतः इनका उसके काल में होना निश्चित है।

दिल्लीवल्लभापाणिपल्लवतले नीतं नवीनं वयः

दिल्लीश्वरो वा जगदीश्वरो वा मनोरथान् पूरयितुं समर्थः।
अन्यैनर्ईपातैः परिदीयमानं शाकाय वा स्याल्लवणाय वा स्यात्॥

शाहजाहां सम्राट का शासनकाल 1628-1658 ई माना जाता है। पण्डितराज जीवितमु यह एक तेलेगुग्रन्थ है। अतः पण्डितराज का जन्मसमय 1600 ई था। वह स्वयं ही ''दिल्ली वल्ली भपाणिपल्लवतले नीतं नवीनं वयः'' कहते हैं। मुगल प्रासाद में प्रवेश का समय आयु तीस बतीस थी। वहां उन्होनें 15 वर्ष व्यतीत किये। जब उन्होंने देहली को छोड़ा उस समय उनकी आयु 45 वर्ष थी इस प्रकार इसका समय 1655 ई अनुमानित है अतः ये 17 वी शताब्दी के आचार्य है।

वंश परिचय- पण्डितराज तैलंग ब्राह्माण थे। उनके पिता पेरुभट्ट थे। इनकी माता लक्ष्मीदेवी। ज्ञानेन्द्रभिक्षु श्रीमहेन्द्र श्रीखण्डदेव और शेषवीरेश्वर गुरु थे।

श्रीमज्ज्ञानेन्द्रभिक्षोरधिगतसकलब्रह्मविद्याप्रपञ्चः।
काणादीराक्षपादीरपि गहनगिरो यो महेन्द्रादवेदीत्॥

जगन्नाथ ने पिता, पेरुभट्ट, ज्ञानेन्द्रभिक्षु से सकलविद्याओं का अध्ययन किया। इनके पिता पेरुभट्ट सर्वविधाधर थे। पण्डितराज सदैव पिता का अनुसरण करते थे। पिता के आशीर्वाद से सर्वविधाधर थे। प्रायः सभी शास्त्रों में जगन्नाथ का पाण्डित्य अतुलित था।

कृति- संस्कृत जगत में जगन्नाथ की कृति अधिक प्रशस्ति को प्राप्त हुई। उनकी कृतियों का विवरण प्रस्तुत है।

1. गंगालहरी - 52 पद्यात्मक गंगा स्तुति है।
2. सुधालहरी - 32 पद्यों मे सूर्य की स्तुति है।
3. अमृतलहरी - 11 श्लोकों में यमुना की स्तुति है।
4. करुणालहरी - 64 श्लोकों में विष्णु की स्तुति है।
5. लक्ष्मीलहरी - 41 पद्यों में लक्ष्मी की स्तुति है।
6. यमुनावर्णनचम्पू - यह चम्पू काव्य है।
7. आसफविलास - आसफरवां महोदय की प्रशस्ति है।

8. प्राणाभरणम् – कामरुपाधीश प्राणनारायण की प्रशस्ति है।

9. जगदाभरणम् – अदयपुराधीश राणाकर्णसिंह के पुत्र जगतसिंह की प्रशास्ति है।

10. चित्रमीमांसाखण्डन – अप्ययदीक्षितकृत चित्रमीमांसा ग्रन्थ का खण्डनात्मक आलोचना है।

11. मनोरमकुचमर्दनम् – सिद्धान्तकौमुदी की टीका मनोरमा का खण्डन है।

12. रसगंगाधर – अपूर्ण अतिप्रौढ अलंकारशास्त्र का ग्रन्थ है।

13. भामिनीविलास – कवितासंग्रह विशेष ग्रन्थ है।

रसगंगाधर ग्रन्थ में दो आनन है। यह ग्रन्थ अपूर्ण है। इसमें काव्यस्वरुप काव्यभेद, रसविवेक शब्दगुणों का लक्षण, अर्थगुणों का लक्षण, भाव लक्षण, ध्वनिविवेक, शक्ति विवेक और अलंकार निरूपण आदि विषयों का प्रतिपादन किया है।

जगन्नाथ किसी यवन युवती से आसक्त थे जिस कारण ब्राह्मणों ने जाति से च्युत कर दिया। उस यवन युवती के मर जाने पर जगन्नाथ राजाश्रय त्यागकर मथुरा आ गये। वहां पर 1674 ई में मृत्यु हो गई। मृत्यु से पूर्व प्रायश्चित करने के लिए सन्नद्ध थे लेकिन उस समय प्रसिद्ध पण्डित भट्टोजिदीक्षित और अप्पयदीक्षित ने अपमानित किया उस कारण उन दोनों का जगन्नाथ के साथ शास्त्रमत भेद ही कहा जाता है।

पाठगत प्रश्न 21.6

39. जगन्नाथ का समय क्या है?

40. जगन्नाथ का देश कौन सा है?

41. रसगंगाधर के रचयिता कौन है?

42. रसगंगाधर में कितने आनन है?

43. जगन्नाथ के पिता का नाम क्या है?

44. जगन्नाथ की माता का नाम क्या है?

पाठान्त प्रश्न

1. आनन्दवर्धन के विषय में लघु टिप्पणी लिखिए।

2. आन्नदवर्धन के देश काल कृति के विषय में लिखिए।

3. ध्वन्यालोक के विषय में लघु टिप्पणी लिखिए।

टिप्पणी

4. अप्पय दीक्षित के विषय में लघु टिप्पणी लिखिए।
5. अप्पय दीक्षित के देशकालकृति के विषय में लिखिए।
6. कुवलयानन्द के विषय में लघु टिप्पणी कीजिए।
7. मम्मटाचार्य के विषय में लघु टिप्पणी कीजिए।
8. मम्मटाचार्य के देश काल व कृति के विषय में लिखिए।
9. काव्यप्रकाश के विषय में लघु टिप्पणी की रचना कीजिए।
10. भोजराज के विषय में लघु टिप्पणी लिखिए।
11. भोजराज के देशकाल व कृति के विषय में लिखिए।
12. भोजराज की कृति के विषय में लिखिए।
13. विश्वनाथ के देश काल व कृति के विषय में लिखिए।
14. विश्वनाथ की कृति के विषय में लिखिए।
15. विश्वनाथ के विषय में लघु टिप्पणी लिखिए।
16. जगन्नाथ के देशकाल व कृति के विषय में लिखिए।
17. जगन्नाथ की कृति के विषय में लघु टिप्पणी लिखिए।

पाठसार

जो काव्य के निर्माण में और स्वरूप दोष गुण अलंकारादि की अवधारण में शक्ति को उन्मेष करता है। वह अलंकार शास्त्र है। जैसे व्याकरण भाषा में व्युत्पत्ति के लिए अपेक्षित है उसी प्रकार अलंकारशास्त्र भी काव्य में निपुणता के लिये अपेक्षित है। इस पाठ में आलंकारिकों के देशकाल कृति के विषय में चर्चा की गयी है। नवी शताब्दी के काश्मीरवासी आनन्दवर्धन ने ध्वन्यालोक ग्रन्थ से ध्वनि प्रस्थान का आरम्भ किया। आनन्दवर्धन के मत में काव्य में ध्वनि ही प्रधान है। 17वीं शताब्दी में तमिलनाडु प्रदेशीय अप्पयदीक्षित ने कुवलयानन्द लिखकर आलंकारिकों में अग्रस्थान प्राप्त किया। 11वीं शताब्दी में काश्मीरवासी मम्मटाचार्य ने काव्यप्रकाश रचकर महती ख्याति प्राप्त की। 12वीं शताब्दी में मालवदेशीय भोजराज ने सरस्वतीकण्ठाभरणम् की रचना की। कविराज विश्वनाथ उत्कलदेशीय ने साहित्यदर्पण की रचना की। वाराणसीस्थ 17वीं शताब्दी के जगन्नाथ ने रसगंगाधर की रचना की। ये अन्तिम आलंकारिक हैं।

आपने क्या सीखा

- ध्वनिकार का परिचय एवं उनकी कृतियों को जाना।
- कौन किस सम्प्रदाय का प्रर्वतक है जाना।
- आलंकारिकों के देशकाल को जाना।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

21.1

1. 855-883 ई	2. काशमीर
3. नोणभट्ट	4. ध्वन्यालोक
5. आनन्दवर्धन	6. 129

21.2

7. 17 वीं शताब्दी	8. तमिलनाडुप्रदेश
9. रंगराजाध्वरीन्द्र	10. कुवलयानन्द
11. चन्द्रालोक	12. 273
13. छ परिच्छेद	14. चित्रमीमांसाखण्डन
15. प्रथम वेकेट	

21.3

16. राजानक	17. 11 वीं शताब्दी
18. काश्मीर देश	19. जैयट
20. काव्यप्रकाश	21. दश उल्लास
22. 143 कारिका	23. वाराणसी में

21.4

24. मालवदेश	25. 11 वीं शताब्दी

टिप्पणी

26. भोजराज	27. पंच परिच्छेद
28. 63 प्रकाश	29. शृंगार रस
30. भोजराज	

21.5

31. उत्कल देश	32. 14 वीं शताब्दी
33. विश्वनाथ	34. श्री चन्द्रशेखर
35. नारायणदास	36. दश परिच्छेद
37. पुष्पमाला , भाषार्णव	38. काव्यप्रकाश की दीपिका टीका

21.6

39. 17 वीं शताब्दी	40. वाराणसी
41. जगन्नाथ	42. दो आनन
43. पेरुभट्ट	44. लक्ष्मी देवी

छात्रों के सरल बोध के लिए आलंकारिकों के जन्म देश काल कृति की तालिका दी गई है।

क्र.सं	**नाम**	**देश**	**काल**	**कृति**
1.	आनन्दवर्धन	काश्मीर	9 वीं शताब्दी	ध्वन्यालोक
2.	अप्पयदीक्षित	तमिलनाडुप्रदेश	17 वीं शताब्दी	कुवलयानन्द
3.	मम्मटाचार्य	काश्मीर	11 वीं शताब्दी	काव्यप्रकाश
4.	भोजराज	मालवदेश	12 वीं शताब्दी	सरस्वतीकण्ठाभरण
5.	विश्वनाथ	उत्कलप्रदेश	14 वीं शताब्दी	साहित्यदर्पण
6.	जगन्नाथ	वाराणसी	17 वीं शताब्दी	रसगंगाधर